①

मध्यकालीन रहस्यवाद से छायावादी रहस्यवाद में भिन्नता

स्नातक भाग-3
हिन्दी (प्रतिष्ठा)
पँचम पत्र

मध्यकालीन रहस्यवाद का संबंध धर्म और ईश्वर के बहाने अलौकिक सत्ता से जुड़ता है। अलौकिक सत्ता तक पहुँचने के लिए विशिष्ट प्रकार की साधना पद्धति या विचारधारा का आश्रय लिया गया है, इसलिए मध्यकालीन रहस्यवाद अपने स्वरूप में सांप्रदायिक है। इसे एक ओर अद्वैतवादी चिंतन दार्शनिक आधार प्रदान करता है, तो दूसरी ओर आस्था और भावुकता के सहारे उस रहस्यात्मक सत्ता तक पहुँचने की कोशिश की जाती है। आधुनिक रहस्यवाद का संबंध ईश्वर की किसी अज्ञात सत्ता से नहीं है। इसके केंद्र में आधुनिक मानव केन्द्रित है। चिंतन

है। यह तर्क और बौद्धिकता के धरातल पर खड़ा होने की कोशिश करता है मनुष्य की असीम शक्ति और अनंत सामर्थ्य में आस्था प्रदर्शित करते हुए। इस प्रकार आधुनिक रहस्यवाद का संबंध उन अनुभूतियों से है जो व्यक्ति से जुड़ा हुआ है और जिसके संदर्भ लौकिक हैं। आधुनिक रहस्यवाद की प्रकृति अंतर्मुखी है और इसके सहारे मानव मन की अतल गहराईयों में उतरने का प्रयास किया गया है — कल्पना की ओर को पकड़कर। इसे हिन्दी साहित्य के इतिहास में रहस्यवाद के विकसनशील स्वरूप के परिप्रेक्ष्य में समझा जा सकता है, छायावादी रहस्यवाद जिसकी एक महत्वपूर्ण कड़ी है।

आचार्य रामचन्द्र शुक्ल ने छायावादी रहस्यावाद को आध्यात्मिकता से सम्बद्ध करके देखते हैं, जिसके कारण यह मध्यकालीन रहस्यवाद के करीब आ जाता है लेकिन नंददुलारे वाजपेयी ने मध्यकालीन रहस्यवाद से इसे अलगाते हुए इसके असांप्रदायिक स्वरूप की ओर संकेत किया हैं:- उसकी मुख्य प्रेरणा स्रोत धार्मिक न होकर मानवीय और सांस्कृतिक है — आधुनिक परिवर्तनशील समाज-व्यवस्था और विचार-जगत में छायावाद भारतीय आध्यात्मिकता की नवीन परिस्थितियों के अनुरूप स्थापना करता है।" मध्यकालीन रहस्यवाद से छायावाद की पृथकता को स्वीकार करने के कारण ही आचार्य नंद दुलारे वाजपेयी

छायावाद और रहस्यवाद में भेद न करने के लिए प्रसाद की आलोचना करते हैं :- "प्रसाद जी ने व्यष्टि सौन्दर्य दृष्टि और समष्टि सौंदर्य दृष्टि में कोई स्पष्ट अंतर नहीं किया, किंतु मैं इस अंतर का विशेष रूप से आग्रह करता हूँ क्योंकि इसने दो विशेष पृथक-पृथक काव्य शैलियों की सृष्टि की है। स्पष्ट है कि नंद दुलारे वाजपेयी और शांतिप्रिय द्विवेदी से लेकर महादेवी, अज्ञेय और डॉ० नगेन्द्र तक ने छायावादी रहस्यवाद को मध्यकालीन रहस्यवाद से अलगाकर देखा है, यद्यपि मध्यकालीन रहस्य भावना से उसके क्षीण से जुड़ाव को भी वे अस्वीकारते हैं नहीं। इसी लिए तो पंत जी ने छायावादी कविता को रहस्यवाद के परिप्रेक्ष्य में देखे जाने का विरोध किया और इस क्रम में इसकी विशिष्टता को रेखांकित

(5)

किया - " मध्ययुगीन संतों की तरह छायावादी कवि आत्म ब्रह्म और आत्म परिष्कार की खोज में न जाकर विश्वात्मा और विश्व जीवन की खोज की ओर अग्रसर हुए।